अथ संध्योपासना (ब्रह्म यज्ञ) विधि:

संध्या के लिए पुस्तक के आरम्भ में दिए गए निर्देश देखें।

आचमन

मन्त्र एक बार का उच्चारण कर तीन बार सीधे हाथ में जल लेकर पीयें।

ओं शन्नो <u>देवीर</u>भिष्ट<u>य</u>ऽआपो भवन्तु <u>पी</u>तये ।

शंयो<u>र</u>भि स्रवन्तु नः ॥१॥

यजुः ३६:१२

शम्। नः। देवीः। अभिष्टंये। आपः। भवन्तु। पीतयें॥ शम्। योः। अभि। स्रवन्तु। नः॥ हे (देवीः) दिव्यगुणों वाले ईश्वर! हमारी सुखी होने की (अभिष्टये) इच्छाओं को पूर्ण कीजिए। (आपः) जल के स्रोत (नः) हमारी (पीतये) प्यास को बुझाकर हमारे लिए (शम्) कल्याणकारी (भवन्तु) हों। (योः) आप (अभि) सभी ओर से (नः) हम पर (शम्) कल्याण की (स्वन्तु) वर्षा कीजिए।

देवी-स्वरूप ईश्वर पूर्ण अभीष्ट कीजिए। यह नीर हो सुधामय कल्याण दान दीजिए॥ नित ऋद्धि-सिद्धि बरसे हित हो सदा हमारा। बहती रहे हृदयमें सद्धर्म प्रेम-धारा॥

इंद्रिय स्पर्श

बाई हथेली में जल के दाहिने हाथ की दो बीच वाली उंगुलियों से अंगों को शुद्ध करें।

ओं वाक् वाक्। (होंठों का स्पर्श करें)

ओं प्राण: प्राण: । (नासिका छिद्रों का स्पर्श करें)

ओं चक्षु: चक्षु: । (आँखों का स्पर्श करें)

ओं श्रोत्रं श्रोत्रम्। (कानों का स्पर्श करें)

ओं नाभि: । (नाभि का स्पर्श करें)

ओं हृदयम् । (हृदय का स्पर्श करें)

ओं कण्ठः । (गले का स्पर्श करें)

ओं शिर: । (सिर का स्पर्श करें)

ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। (कन्धों का स्पर्श करें)

ओं करतल करपृष्ठे ॥ २ ॥ (हथेलियों का आगे पीछे स्पर्श करें)

atha sandhopaasanaa vidiḥ Here Begins the Procedure Of sandhyaa upaasanaa (brahma yajña)

We now Commence The Song of the Soul Established In Divine Meditation. We **meditate** on the Supreme Soul and the Universe, to discover our relationship with both.

aachamana:

Sipping sacramental water as amrita, the nectar of deathlessness, and asking for a life filled with happiness. (Chant the mantra once and sip the water thrice).

1. om shanno deveerabhishtaya 'aapo bhavantu peetaye shañyor-abhi sravantu nah.

Yajuh 36:12

sham naḥ deveeḥ abhiṣhṭaye aapaḥ bhavantu peetaye, sham yoḥ abhi sravantu naḥ.

(abhiṣhṭaye) For attainment of the desirable happiness, may (deveeḥ) the divine (aapaḥ) waters (bhavantu) be (peetaye) for our drink and fulfillment and be (sham) propitious (naḥ) to us; (sravantu) shower (naḥ) on us (sham yoḥ) blessings and happiness (abhi) from all directions.

devee svaroop eeshvar poorṇ abheeṣhṭ keejie yah neer ho sudhaa-may kalyaaṇ daan deejie nit ṛiddhi siddhi barase hit ho sadaa hamaaraa bahatee rahe hṛiday me sad-dharm prem dhaaraa

O All-pervading Mother, Sweet and Divine, Be pleased to bless the cravings of my soul To reach thy bosom. May this world of mine, Be filled with peace and bliss from pole to pole.

indriya sparsha:

Take water on left palm and touch various organs with sacramental water with two middle fingers from the right hand. Praying that these limbs may earn me fame (yasha) and strength (bala).

2. om vaak vaak	(Touch lips)
om praaṇaḥ praaṇaḥ	(Nostrils)
om chakṣhuḥ chakṣhuḥ	(Eyes)
om shrotrañ shrotram	(Ears)
om naabhiḥ	(Navel)
om hṛidayam	(Heart)
om kaṇṭhaḥ	(Throat)
om shiraḥ	(Head)
om baahubhyaam yasho-balam	(Shoulders)
om karatala karapṛiṣhṭhe	(Palms, front and back)

तन मन वचन से होंगे, हम शुद्ध कर्म कारी दुष्कर्म से बचेंगी, सब इंद्रिया हमारी वाणी विशुद्ध होगी, प्रिय प्राण पुण्यशाली होंगी हमारी आँखे, ये दिव्य ज्योति-वाली ये कान ज्ञान भूषित, यह नाभि पृष्टि-कारी होगा हृदय, दयामय! सम्यक सुधर्म धारी भगवान! तेरी गाथा, गाएगा कंठ मेरा सिर मे सदा रमेगा, गौरव गुरुत्व तेरा होंगे ये हाथ मेरे यश ओज तेज-धारी मेरी हथेलियाँ भी होंगी पवित्र प्यारी

मार्जन

अंगों की पुनः शुद्धि के लिए उनपर जल छिडकें।

ओं भू: पुनात् शिरसि। (सिर पर जल छिडकें)

ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। (आँखो पर जल छिडकें)

ओं स्व: पुनातु कण्ठे। (गले पर जल छिडकें)

ओं महः पुनातु हृदये। (हृदय पर जल छिडकें)

ओं जनः पुनातु नाभ्याम् । (नाभि पर जल छिडकें)

ओं तपः पुनातु पादयोः । (पैरों पर जल छिडकें)

ओं सत्यं पुनातु पुनिश्शरिस । (सिर पर जल छिडकें)

ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ॥३॥ (सारे शरीर पर जल छिडकें)

(ओम्) सृष्टि के मूलाधार ईश्वर के गुणों का हम ध्यान करते हैं। (भूः) संसार के पालक हमारा (शिरिस) सिर (पुनातु) पिवत्र करें। (भुवः) दुष्टों के नाशक हमारी (नेत्रयोः) आँखों को (पुनातु) पिवत्र करें। (स्वः) सुखों के कारक हमारा (कण्ठे) कण्ठ (पुनातु) पिवत्र करें। अपार (महः) महानता वाले परमिता हमारा (हृदये) हृदय (पुनातु) पिवत्र करें। संसार के (जनः) जनक हमारी (नाभ्याम्) नाभि (पुनातु) पिवत्र करें। (तपः) उत्तम ज्ञान के स्रोत ईश्वर हमारे (पादयोः) पैरों को (पुनातु) पिवत्र करें। (सत्यं) सत्यरूपी परमेश्वर (पुनः) फिर से हमारा (शिरिस) सिर (पुनातु) पिवत्र करें। (खं) सर्वव्यापी (ब्रह्म) ब्रह्म हमारे (सर्वत्र) सर्वांग (पुनातु) पिवत्र करें

tan man vachan se hoṅge, ham shuddh karm kaaree duṣhkarm se bacheṅgee, sab indriyaa hamaaree vaaṇee vishuddh hogee, priy praaṇ puṇya-shaalee hoṅgee hamaaree aaṅkhe, ye divy jyoti-waalee ye kaan jñaan bhooṣhit, yah naabhi puṣhṭi-kaaree hogaa hṛiday, dayaamay! samyak sudharm dhaaree bhagavaan! teree gaathaa, gaaegaa kanṭh meraa sir me sadaa ramegaa, gaurav gurutv teraa hoṅge ye haath mere yash oj tej dharee meree hatheliyaan bhee hoṅgee pavitr pyaaree

I make a vow before Thy sacred Throne
To try and hold my mortal heart away
From sin, my human organs shall be prone
To keep the world I give Thee on this day.
My tongue, my nose and both the sides of palm,
My eyes, my ears, the genitals and my heart
My hands, my throat, and head, serene and calm,
Will sure remain from sinful deeds apart.

om kham brahma punaatu sarvatra

maarjana:

Seeking God's blessings in purifying the whole body of any impurities (by sprinkling water) and thinking of scrubbing clean all body part and the action performed through them.

3. om bhooḥ punaatu shirasi (Sprinkle the head)
om bhuvaḥ punaatu netrayoḥ (Eyes)
om svaḥ punaatu kaṇṭhe (Throat)
om mahaḥ punaatu hṛidaye (Heart)
om janaḥ punaatu naabhyaam (Navel)
om tapaḥ punaatu paadayoḥ (Feet)
om satyam punaatu punash-shirasi (Head)

(om) We cleanse ourselves by meditating on the divine qualities of God. May the (bhooḥ) Sustainer of all life (punaatu) purify our (shirasi) head! May the (bhuvaḥ) Destroyer of evil (punaatu) purify our (netrayoḥ) eyes! May the (svaḥ) Creator of benevolence (punaatu) purify our (kaṇṭhe) throat! May the One with (mahaḥ) Ultimate greatness (punaatu) purify our (hṛidaye) heart! May the Supreme (janaḥ) Father (punaatu) purify the congregation of nerves in our (naabhyaam) navel! May the (tapaḥ) Source of all knowledge (punaatu) purify our (paadayoḥ) feet! May the Ultimate (satyam) Truth (punash) again (punaatu) purify our (shirasi) head! May the (kham) Omnipresent (brahma) Lord (punaatu) purify (sarvatra) all of our bodily organs!

(All over)

जीवन स्वरूप जगपित! मस्तक पिवत्र करदो दयार्द्र हो दयामय, नयनों मे ज्योति भरदो आनंद मय अधीश्वर, हमको सुकंठ दीजिए भगवन हृदय सदन मे, हरदम निवास कीजिए जग के जनक हमारी हो नाभि निर्विकारी पद भी पिवत्र होवे, हे सर्वज्ञानधारी पुनि-पुनि पुनीत सिर हो, हे सत्यरूप स्वामी सर्वांग शुद्ध होवे, व्यापक विभो! नमामि

प्राणायाम

इस मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करें। प्राणायाम विधि पृष्ठ २ पर देखें।

ओं भूः।

ओं भुवः।

ओं स्वः।

ओं महः।

ओं जनः।

ओं तपः ।

ओं सत्यम् ॥४॥

इति प्राणायाममन्त्राः । तैत्ति १०:२७॥

(ओम्) सृष्टि के मूलाधार ईश्वर के गुणों का हम ध्यान करते हैं। (भूः) संसार के पालक। (भुवः) दुष्टों के नाशक। (स्वः) सुखों के कारक। अपार (महः) महानता वाले। संसार के (जनः) जनक। (तपः) उत्तम ज्ञान के स्रोत। (सत्यम्) सत्यरूपी।

सर्वेश सर्व-व्यापक, संपूर्ण सर्वज्ञाता शिव सत्य रूप सुंदर, सर्वत्र ही सुहाता सक्रिया सगुण सचेतन, सर्वज्ञ सध्यदाता तेरी शरण मे आया हूँ, आर्त हो विधाता jeevan svaroop jaga-pati! mastak pavitr karado dayaardr ho dayaamay, nayanon me jyoti bharado aanand may adheeshvar, hamako sukanth deejie bhagavan hriday sadan me, haradam nivaas keejie jag ke janak hamaaree ho naabhi nirvikaaree pad bhee pavitr hove, he sarv jñaan dhaaree puni puni puneet sir ho, he saty roop swaamee sarvaang shuddh hove, vyaapak vibho namaami

For complete purity in my entire personality, I pray that The Lord, the basis of all existence, grant me knowledge that can help purify my thinking; my vision; my speech; my hearing; my sensual impulses; my movements; my understanding; and my entire personality; so that all my thoughts and actions conform to the dharma.

But Glorious Father! I am weak and frail And hence depend on Thy Loving Grace, My sole efforts will not, O Lord, avail The frightful host of heinous sins to face. So, therefore, Lord, I meekly pray to Thee To make me pure in mind, and too strong To yield to tempting sins. O make me free To sit in peace and sing Thy Glory's song. O Living, Holy, Happy Father, Great, The Wise and Omnipresent King of all, The Sole Eternal Master of my fate, My mind and soul Thy gracious blessings call To make my head, my eyes and passions pure, To change my vicious heart; and guide my feet, To grace my brain and throat, and make it sure That sin will nowhere find a welcome seat.

praanaayaam:

Controlling the breath, and contemplating the qualities of the Supreme Lord. Please refer to the instructions on page 2.

4. om bhooḥ, om bhuvaḥ, om svaḥ, om mahaḥ, om janaḥ, om tapaḥ, om satyam.

Tatti 10:27

(om) We meditate on the divine qualities of God; (bhooḥ) Sustainer of all life, (bhuvaḥ) Destroyer of evil (svaḥ) Creator of benevolence, (mahaḥ) One with Ultimate greatness, (janaḥ) Supreme Father, (tapaḥ) Source of all knowledge, (satyam) Ultimate Truth.

sarvesh sarva-vyaapak, sampoorn sarva-jñaataa shiv saty roop sundar, sarvatr hee suhaataa sakriyaa sagun sachetan, sarvajñ sadhya-daataa teree sharan me aayaa hoon, aart ho vidhaataa

अघमर्षण

सृष्टि के रचना क्रम पर ध्यान लगाकर ईश्वर को ही संसार के रचयिता, पालक और विध्वंसक के रूप में पाते हैं। इससे पाप करने की इच्छा का शमन होता है।

ओम् ऋतं च सृत्यं चाभीद्धात्त<u>प</u>सोऽध्यंजायत । ततो रात्र्यंजायत ततः समुद्रो अं<u>र्</u>णवः ॥५॥

ऋग् १०:१९०:१

ऋतम्। च । सृत्यम्। च । अभिऽइद्धात्। तपंसः। अधि। अजायत्॥ तर्तः। रात्री । अजायत्। तर्तः। सुमुद्रः। अर्णवः॥

इस सृष्टि की रचना से पहले ईश्वर ने (अजायत) प्रलय की । (तत:) इस समय भयंकर (रात्री) रात्री के समान अन्धकार (च) और (तत:) वहाँ (अर्णव:) आवेशित कणों का महाप्रलय के समान एक विशाल (समुद्र:) समुद्र था। ईश्वर ने अपने (अभि) सभी ओर से (इद्धात्) प्रकाशित (तपस:) ज्ञान के (अधि) आधार पर संसार को चलाने के लिए (ऋतम्) शाश्वत (च) व (सत्यम्) सत्य नियमों का (अजायत) निर्माण किया।

ऋत सत्य के सहारे संसार को सजाया। तेरा महान कौशल है सिन्धु ने दिखाया॥

ओं समुद्रादंर्णवादधि संवत्सरो अंजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिष्तो वशी॥६॥

ऋग् १०:१९०:२

समुद्रात् । अर्णवात् । अधि । संवत्सरः । अजायतः ॥ अहोरात्राणि । विऽअदर्धत् । विश्वस्य । मिष्तः । वशी ॥

(अधि) उसके बाद एक कुशल अभियन्ता की भांति, ईश्वर ने (विश्वस्य) संसार को (मिषत:) सुगमता से (वशी) वश में रखने के लिए, उस (अर्णवात्) आवेशित कणों के (समुद्रात्) महा समुद्र से बनने वाले ग्रह नक्षत्रों के लिए काल क्रम, जिसमें (अहो) दिन, (रात्राणि) रात व (संवत्सर:) सम्वत आदि, का (विऽअदधत्) विधान (अजायत) किया।

पहले के कल्प जैसे, रवि चन्द्र फिर बनाए।

दिन रात पक्ष संवत, मे काल क्रम चलाए॥

I meditate on these qualities of God and I pray that I may be like Him as far as my capabilities would permit. May I be dear to others (on the path of righteousness) as He is to me. May I relieve people of their pains, and make them happy. May I earn respect from others (the righteous) and be creative in my dealings. In being motivated to act righteously, may I be a channel for God's Truth

I hold my breath in sacred awe and pray O God of Life, O Holy God of Bliss; O Father, Great and Wise, and True, this day My soul arrives Thy Glorious Feet to kiss.

aghamarşhana:

We meditate and discover the process of creation and find God as the creator, sustainer and destroyer of this creation. This helps us curb our tendency to engage in sinful behavior.

5. om ritañ cha satyañ chaabheeddhaat tapaso'dhyajaayata, tato raatryajaayata tataḥ samudro arṇavaḥ. Rig 10.190.1

ritam cha satyam cha abhi iddhaat tapasah adhi ajaayata, tatah raatree ajaayata tatah samudrah arnavah.

(tataḥ) Before beginning the Creation, God (ajaayata) started the process of destruction which resulted in total darkness like a (raatree) night. At (tataḥ) this time a huge (samudraḥ) ocean of (arṇavaḥ) agitated particles existed. (adhi) Based on his (tapasaḥ) wisdom (cha) and knowledge that was (iddhaat) illuminated from (abhi) all direction, He (ajaayata) created the (ritam) eternal (cha) and (satyam) true laws to govern the creation and functioning of the cosmos.

rit saty ke sahaare, sansaar ko sajaayaa teraa mahaan kaushal, hai sindhu ne dikhaayaa

By God's command His Nature brought to light The principles and the atoms of this earth. Then came chaos and heat and motion bright, And then the waves of ocean got their birth.

6. om samudraadarņavaadadhi samvatsaro ajaayata,

ahoraatraaņi vidadhad vishvasya mishato vashee. Rig 10.190.2 samudraat arņavaat adhi samvatsaraḥ ajaayata,

aho-raatraani vi adadhat vishvasya mişhatan vashee.

(adhi) After that, like an architect, in order to devise a self sustaining system that (vashee) controls and maintains the (miṣhataḥ) smooth movement of the celestial bodies in the (vishvasya) Universe that would be created from that (samudraat) ocean of (arṇavaat) agitated particles, God (ajaayata) devised the (vi adadhat) concept of time that consisted of various relative measures of time like (aho) day, (raatraaṇi) night and (samvatsaraḥ) year.

pahale ke kalp jaise, ravi chandr phir banaae din raat pakṣh samvat, me kaal kram chalaae

ओं सूर्<u>याचन्द्र</u>मसौ धाता यथापूर्वमंकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥ ७॥

ऋग् १०:१९०:३

सूर्या । चन्द्रम् । असौ'। धाता । यथापूर्वम् । अकल्पयत् । दिवम् । च । पृथिवीम् । च । अन्तरिक्षम् । अथो इति'। स्वः ॥

(अथो) इसके बाद (धाता) ईश्वर ने (पूर्वम्) पहले की (यथा) भांति (दिवम्) द्युलोक को (अकल्पयत्) रचा, (सूर्या) सूर्य (चन्द्रम्) चन्द्र (असौ) आदि की रचना की, (पृथिवीम्) पृथिवी को रचा, सौरमण्डल के बाहर अन्य (स्व:) लोकान्तरों को रचा और इन सभी के बीच का

(अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष भी बनाया।

द्यौ अंतरिक्ष धरनी, नित नेम पर टिकाए।

तू रम रहा सभी में, तुझमें सभी समाए॥

आचमन

मन्त्र एक बार का उच्चारण कर तीन बार सीधे हाथ में जल लेकर पीयें।

ओं शन्नो <u>देवीरिभष्टंय</u>ऽआपो भवन्तु <u>पी</u>तये । शंयो<u>रि</u>भ स्रवन्तु नः ॥ ८ ॥

यजुः ३६:१२

शम्। नः। देवीः। अभिष्टंये। आपः। <u>भव</u>न्तु। पीतयें। शम्। योः। अभि। <u>स्रव</u>न्तु। नः॥ शम्। नः। देवीः। अभिष्टंये। आपः। <u>भव</u>न्तु। पीतयें॥ शम्। योः। अभि। <u>स्रव</u>न्तु। नः॥ हे (देवीः) दिव्यगुणों वाले ईश्वर! हमारी सुखी होने की (अभिष्टये) इच्छाओं को पूर्ण कीजिए । (आपः) जल के स्रोत (नः) हमारी (पीतये) प्यास को बुझाकर हमारे लिए (शम्) कल्याणकारी (भवन्तु) हों। (योः) आप (अभि) सभी ओर से (नः) हम पर (शम्) कल्याण

की (स्रवन्तु) वर्षा कीजिए।

देवी-स्वरूप ईश्वर पूर्ण अभीष्ट कीजिए। यह नीर हो सुधामय कल्याण दान दीजिए॥ नित ऋद्धि-सिद्धि बरसे हित हो सदा हमारा। बहती रहे हृदयमें सद्धर्म प्रेम-धारा॥

मनसा परिक्रमा

क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, नीचे व ऊपर दिशा में ध्यान लगाते हुए हम यह देखते हैं कि ईश्वर न सिर्फ हर दिशा में विद्यमान है बल्कि हर दिशा से वह हमारी रक्षा कर रहा है और अनेकों प्रकार के धन हमारे पोषण, सुख व समृद्धि के लिए हमारे ओर भेज रहा है। And after these the planets moved aright Along the annual course of heaven blue. The King of all creates the day and night Without effort and their order due.

7. om sooryaachandramasau dhaataa yathaapoorvam akalpayat divañ cha pṛithiveeñ chaantarikṣhamatho svaḥ. Rig 10.190.3

sooryaa chandram asau dhaataa yathaa-poorvam akalpayat, divam cha prithiveem cha antariksham atho svah.

(atho) After this, (yathaa) like (poorvam) before, (dhaataa) God (akalpayat) created the (divam) celestial realm, the (sooryaa) sun (cha) and (chandram) moon (asau) etc., the (pṛithiveem) earth, (svaḥ) star systems away from the Solar system (cha) and the (antarikṣham) space between all of these celestial bodies.

dyau antarikṣh dharanee, nit nem par ṭikaae too ram rahaa sabhee me, tujhame sabhee samaae

And, as before, the Maker made again, The sun, the moon, and bodies dark and bright, The sky above, the place unknown to pain – The home of bliss - the Realm of Holy Light.

aachamana:

Sipping sacramental water as amrita, the nectar of deathlessness, and asking for a life filled with happiness. (Chant the mantra once and sip the water thrice).

8. om shanno deveerabhishtaya 'aapo bhavantu peetaye, shañyorabhi sravantu nah.

Yajuh 36:12

sham naḥ deveeḥ abhiṣhṭaye aapaḥ bhavantu peetaye, sham yoḥ abhi sravantu naḥ.

 $(abhi \circ h \dagger aye)$ For attainment of the desirable happiness, may $(devee \dot{h})$ the divine $(aapa\dot{h})$ waters (bhavantu) be (peetaye) for our drink and fulfillment and be (sham) propitious $(na\dot{h})$ to us; (sravantu) shower $(na\dot{h})$ on us $(sham\ yo\dot{h})$ blessings and happiness (abhi) from all directions.

devee svaroop eeshvar poorṇ abheeṣhṭ keejie yah neer ho sudhaa-may kalyaaṇ daan deejie nit ṛiddhi siddhi barase hit ho sadaa hamaaraa bahatee rahe hṛiday me sad-dharm prem dhaaraa O All-pervading Mother, Sweet and Divine, Be pleased to bless the cravings of my soul To reach thy bosom. May this world of mine, Be filled with peace and bliss from pole to pole.

manasaa parikramaa:

We sequentially focus our attention in the eastern, southern, western, northern, lower and upper directions and find that God is not only present in all of the directions, but he is also protecting us and sending us bounties of wealth for our nourishment, happiness and prosperity.

ओं प्राची दि<u>ग</u>ग्निरधिपतिर<u>सि</u>तो र<u>िक्षिताऽऽदि</u>त्या इषेवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रिक्षितृभ्यो न<u>म</u> इषुंभ्यो नमं एभ्यो अस्तु । यो३ं ःस्मान् द्वेष्टि यं व्ययं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥९॥ अथर्व ३:२७:१

प्राची । दिक् । अग्निः । अधिपतिः । असितः । रक्षिता । आदित्याः । इषवः ॥

तेभ्यः । नमः । अधिपतिभ्यः । नमः । रक्षितृभ्यः । नमः । इष्भ्यः । नमः । एभ्यः । अस्त् ॥

यः । अस्मान् । द्वेष्टि । यम् । वयम् । द्विष्मः । तम् । वः । जम्भे । दध्मः ॥

(प्राची) पूर्व (दिक्) दिशा का (अधिपतिः) स्वामी (अग्निः) ओजमय ज्ञान रूप अग्नि है। (असितः) असीम व बन्धन रहित ईश्वर हमें मोह आदि के बन्धनों से मुक्त होने का मार्ग दिखाकर हमारी (रक्षिता) रक्षा कर रहा है और (आदित्याः) सूर्य की किरणों के (इषवः) बाण चला (द्वारा), हमारी रक्षा कर हमें प्रेरणा दे रहा है। (तेभ्यः) उन सब दिव्य गुणों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) अधिपतियों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रिक्षतृभ्यः) रक्षा करने वालों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है। (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उस द्वेष भावना को हम (वः) आपके (जम्भे) जबडे (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपूर्द करते हैं।

हे ज्ञान पुँज गणपित! बंधन विहीन न्यारे। पूरब मे रम रहे हो, रक्षक पिता हमारे॥ रिव रिश्मयों से जीवन, पोषण प्रकाश पाता। विज्ञानमय विधायक, ब्रह्माण्ड को चलाता॥ हम बार बार भगवन! करते तुम्हे नमस्ते। यदि द्वेष भावना हो, तो न्याय तेरे हस्ते॥ 9. om praachee digagniradhipatirasito rakṣhitaa"dityaa iṣhavaḥ,
tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakṣhitribhyo nama
iṣhubhyo nama ebhyo astu,
yo3smaan dveṣhṭi yam vayan dviṣhmastam vo jambhe
dadhmaḥ.

Atharva 3:27:1

praachee dik agniḥ adhi-patiḥ asitaḥ rakṣhitaa aadityaaḥ iṣhavaḥ, tebhyaḥ namaḥ adhipatibhyaḥ namaḥ rakṣhitri-bhyaḥ namaḥ iṣhubhyaḥ namaḥ ebhyaḥ astu, yaḥ asmaan dveṣhṭi yam vayam dviṣhmaḥ tam vaḥ jambhe dadhmaḥ.

In the (praachee) eastern (dik) direction, (agnih) omniscient and radiant fire is the (adhi) governing (patih) lord. That (asitah) boundless lord is (rakshitaa) protecting us by showing us the ways to detach ourselves from the material world. The (aadityaah) rays of Sun are the (ishavah) arrows that protect and guide us. O God! We (namah) bow to (tebhyah) all of your divine qualities. We (namah) bow to God, the (adhipatibhyah) master of all. We (namah) bow to God, who is also our (rakshitribhyah) protector. We (namah) bow to the (ishubhyah) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to $(ebhyah \ astu)$ all of the above. (yah) Whosoever may have feelings of (dveshti) jealousy and animosity towards (asmaan) us or (yam) those towards whom (vayam) we may reciprocate with similar feelings of (dvishmah) animosity, we (dadhmah) submit all of (tam) these entities and feelings to (vah) your (jambhe) jaw for justice.

he jñaan puñj gaṇapati! bandhan viheen nyaare poorab me ram rahe ho, rakṣhak pitaa hamaare ravi rashmiyon se jeevan, poṣhaṇ prakaash paataa vijñaanamay vidhaayak, brahmaaṇḍ ko chalaataa ham baar baar bhagavan! karate tumhe namaste yadi dweṣh bhaavanaa ho, to nyaay tere haste

Thou art before us, Father Good and Wise!
The Mighty King who saves the world from woes
Who made the sun that from the East does rise
And on this earth its beams of luster throws —
The lustrous beams which shower life on earth
And makes us living through Thy blessed grace.
Oh Lord, to thank Thee for Thy gift of life
We bend our knees before Thy Holy Face.
We also thank Thee for Thy Rule benign
Thy kind protection and Thy blessings sweet
And those who are the dreaded foes of mine
I lay them humbly at Thy Gracious Feet.

ओं दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपितिस्तिरंश्चिराजी रक्षिता पितर इर्षवः । तेभ्यो नमोऽधिपितिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम् इर्षुभ्यो नम् एभ्यो अस्तु । यो३ं समान् द्वेष्टि यं व्ययं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१०॥ अथर्व ३:२७:२

दक्षिणा । दिक् । इन्द्रः । अधिपतिः । तिरश्चिराजी । रक्षिता । पितरः । इषवः ॥ तेभ्यः । नमः । अधिपतिभ्यः । नमः । रक्षितृभ्यः । नमः । इषुभ्यः । नमः । एभ्यः । अस्तु ॥ यः । अस्मान् । द्वेष्टि । यम् । वयम् । द्विष्मः । तम् । वः । जम्भे । दध्मः ॥

(दक्षिणा) दक्षिण (दिक्) दिशा का (अधिपतिः) स्वामी (इन्द्रः) ऐश्वर्यवान इन्द्र है। वह हमें उत्तम मार्ग पर चलने का रास्ता दिखा (तिरिश्वराजी) सीधा न चल पाने वाले कीट पतंगों आदि की निम्न योनियों में गिरने से हमारी (रिश्तता) रक्षा कर रहा है। (पितरः) ज्ञान, बल, धन व आयु से सम्पन्न शुभिचन्तक (इषवः) बाण के समान हमारे रक्षक और प्रेरणा स्नोत हैं। (तेभ्यः) उन सब दिव्य गुणों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) अधिपतियों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है। (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उस द्वेष भावना को हम (वः) आपके (जम्भे) जबडे (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपूर्द करते हैं।

हे इंद्र रूप ईश्वर! दक्षिण मे भी दिखाते। जड़ जीव जन्तुओं से, सत्वर सदा बचाते॥ वैदिक सुधा पिलाते, हो ज्ञानियों के द्वारा। तुमसे लगन लगी है सर्वस्व हो हमारा॥ हम बार बार भगवन! करते तुम्हे नमस्ते। यदि द्वेष भावना हो, तो न्याय तेरे हस्ते॥

10. om dakṣhiṇaa digindro'dhipatistirashchiraajee rakṣhitaa pitara iṣhavaḥ,

tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakshitribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu,

yo3smaan dveṣhṭi yam vayan dviṣhmastam vo jambhe
dadhmah. Atharva 3:27:2

dakşhinaa dik indrah adhi-patih tirashchiraajee rakşhitaa pitarah işhavah, tebhyah namah adhipatibhyah namah rakşhitri-bhyah namah işhubhyah namah ebhyah astu, yah asmaan dveşhti yam vayam dvişhmah tam vah jambhe dadhmah.

In the (dak shinaa) southern (dik) direction, the (indrah) possessor of righteous wealth, Indra is the (adhi) governing (patih) lord. He, by showing us the righteous path is (rak shitaa) protecting us from falling to level of lowly creatures like (tirashchiraajee) insects who move in a zigzag fashion. Our well wishing (pitarah) elders who are blessed with knowledge, strength, wealth and age are the (ishavah) arrows that protect and stimulate our intellect. O God! We (namah) bow to (tebhyah) all of your divine qualities. We (namah) bow to God, the (adhipatibhyah) master of all. We (namah) bow to God, who is also our (rakshitribhyah) protector. We (namah) bow to the (ishubhyah) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (ebhyah astu) all of the above. (yah) Whosoever may have feelings of (dveshti) jealousy and animosity towards (asmaan) us or (yam) those towards whom (vayam) we may reciprocate with similar feelings of (dvishmah) animosity, we (dadhmah) submit all of (tam) these entities and feelings to (vah) your (jambhe) jaw for justice.

he Indr roop eeshwar! dakşhin me bhee dikhaate jad jeev jantuon se, satwar sadaa bachaate vaidik sudhaa pilaate, ho jñaaniyon ke dwaaraa tumase lagan lagee hai sarvasv ho hamaaraa ham baar baar bhagavan! karate tumhe namaste yadi dveşh bhaavanaa ho, to nyaay tere haste

Oh Mighty Sovereign! Thou art to our right
The Great protector from the dreaded brood
Of boneless reptiles. Lord of Vedic Light!
Thy sages come to teach us what is good.
We also thank Thee for Thy Rule benign
Thy kind protection and Thy blessings sweet
And those who are the dreaded foes of mine
I lay them humbly at Thy Gracious Feet.

ओं प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपितिः पृदांकू रिक्षताऽन्निमिषंवः । तेभ्यो नमोऽधिपितिभ्यो नमो रिक्षितृभ्यो नम् इषुंभ्यो नमं एभ्यो अस्तु । यो३ं ःस्मान् द्वेष्टि यं व्ययं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥११॥ अर्थ्व ३:२७:३

प्रतीची। दिक्। वरुणः। अधिपतिः। पृदाकू। रक्षिता। अन्नम्। इषवः॥
तेभ्यः। नमः। अधिपतिभ्यः। नमः। रक्षितृभ्यः। नमः। इषुभ्यः। नमः। एभ्यः। अस्तु॥
यः। अस्मान्। द्वेष्टि। यम्। वयम्। द्विष्मः। तम्। वः। जम्भे। दध्मः॥
(प्रतीची) पश्चिम (दिक्) दिशा का (अधिपतिः) स्वामी (वरुणः) जलों के देव वरुण है। वह हममें (पृदाकू) साँप बिच्छुओं जैसी विषैली पशुवत प्रवृत्तिओं का शमन कर हमारी (रक्षिता) रक्षा करता है। (अन्नम्) अन्न के (इषवः) बाणों द्वारा हमारी रक्षा करता है और प्रेरणा देता है। (तेभ्यः) उन सब दिव्य गुणों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) अधिपतियों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन

सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है। (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता

है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उस द्वेष भावना को हम

(वः) आपके (जम्भे) जबडे (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपुर्द करते हैं।

पश्चिम मे भी प्रकट हो, तुम ही वरुण कहाते। विषधारीयों के बाधा विग्रह विफल बनाते॥ सब प्राणीयों का पोषण, करते हो अन्न द्वारा। दुख मे दया दिखाते, सुख मे तुम्ही सहारा॥ हम बार बार भगवन! करते तुम्हे नमस्ते। यदि द्वेष भावना हो, तो न्याय तेरे हस्ते॥

11. om prateechee digvaruņo'dhipatiḥ pṛidaakoo rakṣhitaa'nnam iṣhavaḥ

tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakshitribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu,

yo3smaan dveshti yam vayan dvishmastam vo jambhe dadhmah. Atharva 3:27:3

prateechee dik varuṇaḥ adhipatiḥ pṛidaakoo rakṣhita-annam iṣhavaḥ, tebhyaḥ namaḥ adhipatibhyaḥ namaḥ rakṣhitṛi-bhyaḥ namaḥ iṣhubhyaḥ namaḥ ebhyaḥ astu, yaḥ asmaan dveṣhṭi yam vayam dviṣhmaḥ tam vaḥ jambhe dadhmaḥ.

In the (prateechee) western (dik) direction, the (varuṇah) sustainer of waters, Varuṇa is the (adhi) governing (patih) lord. He (rakshita) protects us by telling us to curb our poisonous animal tendencies like those of (pridaakoo) scorpions, snakes etc. (annam) Grains are the (ishavah) arrows that protect and nourish us. O God! We (namah) bow to (tebhyah) all of your divine qualities. We (namah) bow to God, the (adhipatibhyah) master of all. We (namah) bow to God, who is also our (rakshitribhyah) protector. We (namah) bow to the (ishubhyah) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to $(ebhyah \ astu)$ all of the above. (yah) Whosoever may have feelings of (dveshti) jealousy and animosity towards (asmaan) us or (yam) those towards whom (vayam) we may reciprocate with similar feelings of (dvishmah) animosity, we (dadhmah) submit all of (tam) these entities and feelings to (vah) your (jambhe) jaw for justice.

pashchim me bhee prakaṭ ho, tum hee varuṇ kahaate viṣha-dhaariyon ke baadhaa vigrah viphal banaate sab praaṇiyon kaa poṣhan, karate ho ann dwaaraa dukh me dayaa dikhaate, sukh me tumhee sahaaraa ham baar baar bhagavan! karate tumhe namaste yadi dveṣh bhaavanaa ho, to nyaay tere haste

Thou art behind us, gracious King, adored
As Great Protector from bony beasts
Thou save our humble lives having stored
The hungry earth, O Lord, with human feast.
We also thank Thee for Thy Rule benign
Thy kind protection and Thy blessings sweet
And those who are the dreaded foes of mine
I lay them humbly at Thy Gracious Feet.

ओं उदींची दिक् सोमोऽधिंपतिः स्वजो रक्षिताऽशनिरिषंवः । तेभ्यो नमोऽधिंपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम् इषुंभ्यो नमं एभ्यो अस्तु । यो३ं ःस्मान् द्वेष्टि यं व्ययं द्विष्मस्तं वो जम्भे दक्ष्मः ॥१२॥ अथर्व ३:२७:४

उदीची | दिक् | सोमः | अधिपतिः | स्वजः | रक्षिता | अशिनः | इषवः ॥ तेभ्यः | नमः | अधिपतिभ्यः | नमः | रक्षितृभ्यः | नमः | इषुभ्यः | नमः | एभ्यः | अस्तु ॥ यः | अस्मान् | द्वेष्टि | यम् | वयम् | द्विष्मः | तम् । वः | जम्भे | दध्मः ॥ (उदीची) उत्तर (दिक्) दिशा का (अधिपतिः) स्वामी (सोमः) शान्तिदायक प्रकाश है | (स्वजः) स्वयं उत्पन्न हुआ यह हमारी (रक्षिता) रक्षा करता है | (अशिनः) ओजमयी विद्युत (औरोरा बोरेलिस) के (इषवः) बाणों द्वारा हमारी रक्षा करता है और प्रेरणा देता है | (तेभ्यः) उन सब दिव्य गुणों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) अधिपतियों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रक्षितृभ्यः) रक्षा करने वालों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है | (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उस द्वेष भावना को हम (वः) आपके (जम्भे) जबडे (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपूर्व करते हैं ।

हे सोम रूप स्वामी! उत्तर उपांग तेरा। सर्वत्र सब दिशा में, है आप का बसेरा॥ विद्युत-विधान द्वारा, जगती को जगमगाया। जीवों में चेतना का, संचार कर दिखाया॥ हम बार बार भगवन! करते तुम्हे नमस्ते। यदि द्वेष भावना हो, तो न्याय तेरे हस्ते॥ 12. om udeechee dik somo'dhipatiḥ svajo rakṣhita-ashanir iṣhavaḥ, tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakṣhitribhyo nama iṣhubhyo nama ebhyo astu, yo3smaan dveṣhṭi yam vayan dviṣhmastam vo jambhe dadhmah.

Atharva 3:27:4

udeechee dik somah adhi-patih svajah rakshitaa ashanih ishavah, tebhyah namah adhipatibhyah namah rakshitri-bhyah namah ishubhyah namah ebhyah astu, yah asmaan dveshti yam vayam dvishmah tam vah jambhe dadhmah.

In the (udeechee) northern (dik) direction the (somah) calming lights like Aurora Borealis are the (adhi) governing (patih) lord. (svajah) Created by their own nature these lights (rakshitaa) protect us. Radiant (ashanih) electric impulses are the (ishavah) arrows that protect us. O God! We (namah) bow to (tehyah) all of your divine qualities. We (namah) bow to God, the (adhipatihyah) master of all. We (namah) bow to God, who is also our (rakshitrihyah) protector. We (namah) bow to the (ishuhyah) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (ehyah astu) all of the above. (yah) Whosoever may have feelings of (dveshti) jealousy and animosity towards (asmaan) us or (yam) those towards whom (vayam) we may reciprocate with similar feelings of (dvishmah) animosity, we (dadhmah) submit all of (tam) these entities and feelings to (vah) your (jambhe) jaw for justice.

he som roop svaamee! uttar upaaṅg teraa sarvatr sab dishaa men, hai aap kaa baseraa vidyut vidhaan dwaaraa, jagatee ko jagamagaayaa jeevon me chetanaa kaa, sañchaar kar dikhaayaa ham baar baar bhagavan! karate tumhe namaste yadi dveṣh bhaavanaa ho, to nyaay tere haste

And Thou art to our left, O Peaceful King
To save us from the self-borne insects' bane
By Nature's heat. Thy praise we humbly sing,
O Loving Savior from the pangs of pain!
We also thank Thee for Thy Rule benign
Thy kind protection and Thy blessings sweet
And those who are the dreaded foes of mine
I lay them humbly at Thy Gracious Feet.

ओं ध्रुवा दिग्विष्णुरिधपितिः कुल्माषंग्रीवो रिक्षिता वी्रुरुध इषवः । तेभ्यो नमोऽिधपितिभ्यो नमो रिक्षितृभ्यो नम् इषुभ्यो नम् एभ्यो अस्तु । यो्३ं ःस्मान् द्वेष्टि यं व्ययं द्विष्मस्तं वो जम्भे दक्ष्मः ॥१३॥ अथर्व ३:२७:५

ध्रुवा । दिक् । विष्णुः । अधिपतिः । कल्माष । ग्रीवः । रक्षिता । वीरुधः । इषवः ॥ तेभ्यः । नमः । अधिपतिभ्यः । नमः । रक्षितृभ्यः । नमः । इषुभ्यः । नमः । एभ्यः । अस्तु ॥ यः । अस्मान् । द्वेष्टि । यम् । वयम् । द्विष्मः । तम् । वः । जम्भे । दध्मः ॥

(ध्रुवा) नीचे की (दिक्) दिशा का (अधिपतिः) स्वामी (विष्णुः) सर्वव्यापक ईश्वर है। (कल्माष) पाप व बुराईयों को (ग्रीवः) निगल कर वह हमारी (रिक्षता) रक्षा करता है। (वीरुधः) पेड पौधे के (इषवः) बाणों द्वारा हमारी रक्षा करता है और प्रेरणा देता है। (तेभ्यः) उन सब दिव्य गुणों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) अधिपतियों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रिक्षतृभ्यः) रक्षा करने वालों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है। (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उस द्वेष भावना को हम (वः) आपके (जम्भे) जबडे (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपूर्व करते हैं।

हे विष्णु सर्व व्यापिन! नीचे निवास करते। फल फूल पेड़ पल्लव, सब में तुम्ही विचरते॥ तुम कर रहे हो रक्षण, संतानवत हमारा। दुख सुख सभी समय में, साथी सखा सहारा॥ हम बार बार भगवन! करते तुम्हे नमस्ते। यदि द्वेष भावना हो, तो न्याय तेरे हस्ते॥

13. om dhruvaa digvişhnuradhipatih kalmaaşha-greevo rakşhitaa veerudha işhavah,

tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakshitribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu,

yo3smaan dveṣhṭi yam vayan dviṣhmastam vo jambhe
dadhmah. Atharva 3:27:5

dhruvaa dik vişhnuh adhi-patih kalmaaşha-greevah rakşhitaa veerudhah işhavah, tebhyah namah adhipatibhyah namah rakşhitri-bhyah namah işhubhyah namah ebhyah astu, yah asmaan dveşhti yam vayam dvişhmah tam vah jambhe dadhmah.

In the (dhruvaa) lower (dik) direction the (vishnuh) all pervading God is the (adhi) governing (patih) lord. He (rakshitaa) protects us by (greevah) swallowing (removing) our (kalmaasha) tendencies to commit sins. The (veerudhah) plants, herbs and trees are the (ishavah) arrows that protect and nourish us. O God! We (namah) bow to (tebhyah) all of your divine qualities. We (namah) bow to God, the (adhipatibhyah) master of all. We (namah) bow to God, who is also our (rakshitribhyah) protector. We (namah) bow to the (ishubhyah) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to $(ebhyah \ astu)$ all of the above. (yah) Whosoever may have feelings of (dveshti) jealousy and animosity towards (asmaan) us or (yam) those towards whom (vayam) we may reciprocate with similar feelings of (dvishmah) animosity, we (dadhmah) submit all of (tam) these entities and feelings to (vah) your (jambhe) jaw for justice.

he viṣhṇu sarv vyaapin! neeche niwaas karate phal phool peḍ pallav, sab men tumhee vicharate tum kar rahe ho rakṣhaṇ, santaana-wat hamaaraa dukh sukh sabhee samay men, saathee sakhaa sahaaraa ham baar baar bhagavan! karate tumhe namaste yadi dveṣh bhaavanaa ho, to nyaay tere haste

Thou art below us, Omnipresent King
To nourish life with plants of tuberous roots
And verdant trees that leafy shelter brings,
And yield to us ten thousand kinds of fruits.
We also thank Thee for Thy Rule benign
Thy kind protection and Thy blessings sweet
And those who are the dreaded foes of mine
I lay them humbly at Thy Gracious Feet.

ओम् <u>ऊर्ध्वा दिग्बृह</u>स्पि<u>ति</u>रिधिपितिः श्चित्रो रि<u>क्षि</u>ता <u>वर्षिमिर्षिवः ।</u> तेभ्यो नमोऽधिपितिभ्यो नमो रि<u>क्षितृभ्यो नम् इषुभ्यो</u> नम् एभ्यो अस्तु । यो३ं ःस्मान् द्वेष्टि यं <u>व</u>यं द्विष्मस्तं वो जम्भे दक्ष्मः ॥१४॥ अथर्व ३:२७:६

ऊर्ध्वा । दिक् । बृहस्पतिः । अधिपतिः । श्वित्रः । रक्षिता । वर्षम् । इषवः ॥ तेभ्यः । नमः । अधिपतिभ्यः । नमः । रक्षितृभ्यः । नमः । इषुभ्यः । नमः । एभ्यः । अस्तु ॥ यः । अस्मान् । द्वेष्टि । यम् । वयम् । द्विष्मः । तम् । वः । जम्भे । दध्मः ॥

(ऊर्ध्वा) ऊपर की (दिक्) दिशा का (अधिपतिः) स्वामी (बृहस्पतिः) विस्तृत ज्ञान वाला ईश्वर है। वह (श्वित्रः) शुद्ध स्वरूप हमारी (रक्षिता) रक्षा करने वाला है और (वर्षम्) वर्षा के (इषवः) बाणों द्वारा हमारी रक्षा करता है और प्रेरणा देता है। (तेभ्यः) उन सब दिव्य गुणों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) अधिपतियों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रक्षितृभ्यः) रक्षा करने वालों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है। (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उस द्वेष भावना को हम (वः) आपके (जम्भे) जबडे (न्याय व्यवस्था) के (दक्ष्मः) सपुर्द करते हैं।

अंतर दृगों से दिग्पति! ऊपर भी दृष्टि आते। ऋतु सिद्ध वृष्टि होती, सब सृष्टि को चलाते॥ भौतिक विभूतियाँ हैं, सब आपकी निशानी। कैसे कहेगी वाणी, अदभुत अकथ कहानी॥ हम बार बार भगवन! करते तुम्हे नमस्ते। यदि द्वेष भावना हो, तो न्याय तेरे हस्ते॥

उपस्थान

यह जानने के बाद कि ईश्वर हमारे भीतर ही है हम अपने आप को ईश्वर के अत्यन्त निकट पाते हैं।

ओम् उद्वयं तर्म<u>सस्पिर</u> स्वुः पश्यन्तऽउत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१५॥

यजुः २०:२१, यजुः २७:१०, यजुः ३५:१४, यजुः ३८:२४

उत् । <u>व</u>यम् । तमंसः । परि । स्वुरिति स्वुः । पश्यन्तः । उत्त<u>र</u>ंमित्युत्ऽतरम् । द्वेवम् । द्वेवत्रेति दे<u>व</u>ऽत्रा । सूर्य्यम् । अर्गन्म । ज्योतिः । <u>उत्त</u>ममित्युत्ऽ<u>त</u>मम् ॥

14. om oordhvaa digbṛihaspatiradhipatiḥ shvitro rakṣhitaa varṣhamiṣhavaḥ,

tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakshitribhyo nama ishubhyo nama ebhyo astu,

yo3smaan dveṣhṭi yam vayan dviṣhmastam vo jambhe
dadhmah. Atharva 3:27:6

oordhvaa dik bṛihaspatiḥ adhipatiḥ shvitraḥ rakṣhitaa varṣham iṣhavaḥ, tebhyaḥ namaḥ adhipatibhyaḥ namaḥ rakṣhitṛi-bhyaḥ namaḥ iṣhubhyaḥ namaḥ ebhyaḥ astu, yaḥ asmaan dveṣhṭi yam vayam dviṣhmaḥ tam vaḥ jambhe dadhmaḥ.

In the (oordhvaa) upper (dik) direction the (brihaspatih) possessor of the elaborate knowledge is the (adhi) governing (patih) lord. He (rakshitaa) protects us with his (shvitrah) purity. The (varsham) rain drops are the (ishavah) arrows that protect and nourish us. O God! We (namah) bow to (tebhyah) all of your divine qualities. We (namah) bow to God, the (adhipatibhyah) master of all. We (namah) bow to God, who is also our (rakshitribhyah) protector. We (namah) bow to the (ishubhyah) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (ebhyah astu) all of the above. (yah) Whosoever may have feelings of (dveshti) jealousy and animosity towards (asmaan) us or (yam) those towards whom (vayam) we may reciprocate with similar feelings of (dvishmah) animosity, we (dadhmah) submit all of (tam) these entities and feelings to (vah) your (jambhe) jaw for justice.

antar dṛigo se digpati! oopar bhee dṛiṣhṭi aate ritu siddh vṛiṣhṭi hotee, sab sṛiṣhṭi ko chalaate bhautik vibhootiyaan hain, sab aapakee nishaanee kaise kahegee vaaṇee, adabhut akath kahaanee ham baar baar bhagavan! karate tumhe namaste yadi dveṣh bhaavanaa ho, to nyaay tere haste

Thou art above us, Great and Holy King
To develop and protect us on this earth.
Thy grace the vital drop of rain doth bring
To fill with corn the seat of mortal birth.
We also thank Thee for Thy Rule benign
Thy kind protection and Thy blessings sweet
And those who are the dreaded foes of mine
I lay them humbly at Thy Gracious Feet.

upastaana:

We realize that God is within us. We feel ourselves very close to him.

15. om udvayan tamasaspari svaḥ pashyanta'uttaram, devan devatraa sooryyamaganma jyotiruttamam.

Yajuh 20:21, Yajuh 27:10, Yajuh 35:14, Yajuh 38:24

(वयम्) हम श्रद्धा व भक्ति पूर्वक (उत्) चिन्तन द्वारा (पश्यन्तः) अनुभव करते हुए, (तमसः) अन्धकार से (पिर) परे, (स्वः) स्वयं प्रकाशमान, सुखकारक, (उत्तरम्) प्रलयकारी विध्वंस के बाद भी विद्यमान, सभी प्रश्नों का हल, (देवऽत्रा) विद्वानों के ज्ञान का स्रोत, (सूर्य्यम्) प्रकाशरूप में सर्वत्र व्याप्त, (ज्योतिः) ज्योति स्वरूप, (उत्तमम्) सर्वोच्च (देवम्) ईश्वर को (अगन्म) प्राप्त करें।

रिव रिश्म के रमैय्या! पावन प्रभा दिखा दो। अज्ञान की तिमस्रा, भूलोक से मिटा दो॥ देवो के देव अनुदिन, हो दिव्य दृष्टि प्यारी। श्रुति गान को ना भूले, रसना कभी हमारी॥

ओम् उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति <u>के</u>तवः । दृशे विश्वां<u>य</u> सूर्य्यम् ॥१६॥

यजुः ७:४१, यजुः ३३:३१

उत्। ॐऽइत्यूँ। त्यम्। जातवेदसिमितिं जातऽवेदसम्। देवम्। वहन्ति । केतवःं॥ दृशे। विश्वायं। सूर्य्यम् ॥३१॥

हम (उत्) भली प्रकार विचार कर (उ) निश्चय करें कि जैसे (सूर्य्यम्) सूर्य का प्रकाश (विश्वाय) विश्व को (दृशे) दिखाता है उसी प्रकार हम (त्यम्) उस (जात) उत्पत्ति कर्ता के (वेदसम्) ज्ञान का प्रकाश पाकर (देवम्) विद्वान बनें और उस ज्ञान को (वहन्ति) फैलाकर (केतवः) प्रतिष्ठा प्राप्त करें।

सुंदर सुपथ दिखाया, मद मोह लोभ टारा। अज्ञान तम मिटाया, वर वेद ज्ञान द्वारा॥ जीवन मे ज्योति प्राणों में प्रेरणा तुम्ही हो। मन में मनन, बदन में बल-साधना तुम्ही हो॥

ओं <u>चित्रं देवानामुर्दगादनीकं</u> चक्षुं<u>र्मित्रस्य</u> वर्रुणस्याग्नेः । आऽप्रा द्यावापृ<u>थि</u>वीऽ<u>अ</u>न्तरि<u>क्ष</u> सूर्यंऽआत्मा जर्गतस्त्रस्थुषंश्च स्वाहां ॥१७॥

यजुः ७:४२, यजुः १३:४६

चित्रम् । देवानाम् । उत् । अगात् । अनीकम् । चक्षुः । मित्रस्यं । वर्रणस्य । अग्नेः ॥ आ । अप्राः । द्यावापृथिवीऽइति द्यावापृथिवी । अन्तरिक्षम् । सूर्यः । आत्मा । जर्गतः । तस्थुषः । च । स्वाहां ॥ ut vayam tamasaḥ pari svaḥ pashyantaḥ uttaram, devam devatraa sooryyam-aganma jyotiḥ uttamam.

During the (ut) meditation (vayam) we (pashyantah) experience and (aganma) become close to (uttamam) Supreme (devam) Lord who is (pari) distant from (tamasah) darkness, (svah) self radiant source of happiness, (uttaram) present after the disolution of the Universe as the ultimate solution to all questions and problems, (devatraa) source of knowledge for the scholars and (sooryyam) spread all over in the form of (jyotih) radiant light.

ravi rashmi ke ramaiyyaa! paawan prabhaa dikhaa do ajñaan kee tamisraa, bhoolok se miṭaa do devo ke dev anudin, ho divy dṛiṣhṭi pyaaree shruti gaan ko naa bhoole, rasanaa kabhee hamaaree

May I obtain the glorious God of Light The wisest God of Bliss and Lord Supreme The Sun that keeps the souls of mortals bright And forms my humble prayer's sacred theme.

16. om udutyañ jaatavedasan devam vahanti ketavaḥ, drishe vishvaaya sooryyam.

Yajuḥ 7:41, Yajuḥ 33:31

ut u tyam jaatavedasam devam vahanti ketavaḥ, dṛishe vishvaaya sooryyam.

(ut) After meditating and carefully analyzing we (u) decide that as the (sooryyam) Sun spreads its light to make the (vishvaaya) World (dṛishe) visible to us, we should also learn the (vedasam) divine knowledge of (tyam) the (jaata) Creator, become (devam) scholars and gain (ketavaḥ) respect by being the (vahanti) bearer and broadcaster of this knowledge.

sundar supath dikhaayaa, mad moh lobh ṭaaraa ajñaan tam miṭaayaa, var ved jñaan dvaaraa jeevan men jyoti praaṇon me preraṇaa tumhee ho man me manan, badan men bala-saadhanaa tumhee ho

The various objects of this wondrous earth
Are beacon flags to guide us on to know
The Glorious Sun of Life Who gives us birth
And sent His Veda, the righteous path to show.

17. om chitran devaanaamudagaadaneekañ chakṣhurmitrasya varuṇasyaagneḥ, aa'praa dyaavaapṛithivee'antarikṣhaṁ soorya'aatmaa jagatastasthuṣhashcha svaahaa.

Yajuh 7:42 Yajuh 13:46

chitram devaanaam ut agaat aneekam chakṣhuḥ mitrasya varuṇasya agneḥ, aa apraaḥ dyaavaa-pṛithivee antarikṣham sooryyaḥ aatmaa jagataḥ tasthuṣhaḥ cha svaahaa.

उस ईश्वर के (चित्रम्) अद्भुत गुण ही (देवानाम्) विद्वानों को ज्ञान का प्रकाश देकर (अनीकम्) श्लेष्ठ बनाते हैं। (मित्रस्य) मित्र स्वभाव व (वरुणस्य) श्लेष्ठ आचरण वाले (अग्नेः) ज्ञानियों के हृदयों को (उत्) भली प्रकार (अगात्) प्राप्त हो वह ही उनका (चक्षुः) मार्गदर्शक है। (पृथिवी) पृथ्वी, (द्यावा) द्युलोक व (अन्तिरक्षम्) अन्तिरक्ष में (च) और (जगतः) चेतन व (तस्थुषः) जड जगत में (आ) सब ओर (अप्राः) व्याप्त उस ईश्वर का (स्वाहा) सुखकारक सत्यरूपी (सूर्यः) प्रकाश हम अपनी (आत्मा) आत्मा में फैला हुआ देख रहें हैं।

आश्चर्यमय अलौकिक, अद्भुत अपूर्व करनी है आपमें अवस्थित, अधि अंतरिक्ष अवनी माया मृषा मिटाकर, मन्तव्य पथ दिखाओ भव बन्धनों से भगवन! इस भक्त को छुड़ाओ

ओं तच्चक्षुर्देविहितं पुरस्तांच्छुक्रमुच्चरत्।

पश्येम <u>श</u>रदः <u>श</u>तं जीवेम <u>श</u>रदः <u>श</u>त र शृणुंयाम <u>श</u>रदः <u>श</u>तं प्र ब्रंवाम <u>श</u>रदः

शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूर्यश्च शरदः शतात् ॥१८॥

यजुः ३६:२४

तत् । चक्षुः' । <u>देवहितं</u>पिति <u>देवऽहितम् । पु</u>रस्तात् । शुक्रम् । उत् । <u>चरत्</u> । पश्येम । <u>श</u>रदः' । <u>श</u>तम् । जीवेम । <u>श</u>रदः' । <u>श</u>तम् । शृणुंयाम । <u>श</u>रदः' । <u>श</u>तम् । प्र । <u>ब्रवाम</u> । <u>श</u>रदः' । <u>श</u>तम् । अदीनाः । स्याम । <u>श</u>रदः' । <u>श</u>तम् । भूयः' । च । <u>श</u>रदः' । <u>श</u>तात् ॥

(पुरस्तात्) अनादि काल से (तत्) वह (शुक्रम्) शुद्ध स्वरूप ईश्वर (देव) विद्वानों के (हितम्) हित के लिए (उत्) भली प्रकार (चरत्) आचरण करने का ज्ञान (चक्षुः) दिखा (दे) रहा है। (शतम्) सौ (शरदः) वर्ष तक हम उसकी सृष्टि को (पश्येम) देखते रहें। (शतम्) सौ (शरदः) वर्ष तक उसके दिए (जीवेम) प्राणों को धारण कर उसका ध्यान लगायें। (शतम्) सौ (शरदः) वर्ष तक उसकी कीर्ति को (शृण्याम) सुनें। (शतम्) सौ (शरदः) वर्ष तक उसके दिए ज्ञान की (प्र) सब ओर (ब्रवाम) चर्चा करें। (शतम्) सौ (शरदः) वर्ष तक (अदीनाः) आत्म निर्भर (स्याम) रहें। (च) और (शतात्) सौ (शरदः) वर्ष से (भूयः) अधिक भी जीवित रहें तो भी ऐसे ही अंगों में क्रिया और आत्म निर्भरता बनी रहे।

The (chitram) wonderful qualities of God guide the (devaanaam) scholars in acquiring the (aneekam) best knowledge and behaviors. He (ut agaat) solely and completely (chakṣhuḥ) watches the pathways taken by the (mitrasya) friendly and (varuṇasya) courteous (agneḥ) scholars. He is (apraaḥ) present (aa) everywhere in the (dyaavaa) celestial bodies, the (pṛithivee) earth and the (antarikṣham) space between them, as well as in everything (jagataḥ) living (cha) or (tasthuṣhaḥ) non-living. We can feel the (sooryyaḥ) illumination of his (svaahaa) joyful true nature spread in our (aatmaa) soul.

aashcharya-may alaukik, adabhut apoorv karanee hai aap men avasthit, adhi antariksh avanee maayaa mrishaa mitaakar, mantavy path dikhaao bhav bandhanon se bhagavan! is bhakt ko chhudaao

How wondrous is this Lord of Holy Light
The sun's Support, the God of moon, the Source
Of shining bodies, the Lord of fire bright,
The heaven's Lord, the King of earth, the Force
That made the sky and countless kinds of things
That moves and do not move. O Lord of might,
My humble heart Thy sacred prayer sings
To let me think, speak and act right.

18. om tachchakṣhurdevahitam purastaachchhukramuchcharat, pashyema sharadaḥ shatañ jeevema sharadaḥ shataṃ shṛiṇuyaama sharadaḥ shatam pra bravaama sharadaḥ shatamadeenaaḥ syaama sharadaḥ shatam bhooyashcha sharadaḥ shataaat.

Yajuḥ 36:24

tat chakṣhuḥ devahitam purastaar shukram ut charat, pashyema sharadaḥ shatam jeevema sharadaḥ shatam shriṇuyaama sharadaḥ shatam pra bravaama sharadaḥ shatam adeenaaḥ syaama sharadaḥ shatam bhooyaḥ cha sharadaḥ shataaat.

(purastaat) From the time before the beginning, for the (hitam) benefit of the (deva) scholars (tat) that God who is embodiment of (shukram) purity, has been (chakṣhuḥ) showing them the pathways of the (ut) proper (charat) conduct. May we continue to (pashyema) see and admire his creation for (shatam) one hundred (sharadaḥ) years! May we continue to (jeevema) live and medidate on his qualities for (shatam) one hundred (sharadaḥ) years! May we continue to (shṛiṇuyaama) listen to his praise for (shatam) one hundred (sharadaḥ) years! May we continue to (bravaama) spread his knowledge (pra) everywhere for (shatam) one hundred (sharadaḥ) years! May we continue to (syaama) be (adeenaaḥ) self dependent for (shatam) one hundred (sharadaḥ) years! (cha) And even if we live (bhooyaḥ) more than (shataaat) one hundred (sharadaḥ) years may we continue to be self dependent with a fully functional body.

विधना विनय यही है, मैं वीरवर कहाऊँ होकर शतायु स्वामिन, तुमसे लगन लगाऊँ सौ साल तक हमारी, आँखे हो ज्योति धारी हो श्रोत श्रव्य शाली, सक्षम सदा सुखारी वाणी विराट विभु की, विरदावली सुनावे परतंत्रता है पातक, स्वातन्त्र्य मन्त्र गावे सौ वर्ष से अधिक भी, जीवित रहे करारी सर्वांग की क्रियाएँ स्थिर रहे हमारी

आचमन

मन्त्र एक बार का उच्चारण कर तीन बार सीधे हाथ में जल लेकर पीयें। ओं शन्नो देवीरिभष्टंयऽआपो भवन्तु पीतयें। शंयोरिभ स्रवन्तु नः ॥ १९॥

यजुः ३६:१२

शम्। नः। देवीः। अभिष्टंये। आपः। भवन्तु। पीतयें। शम्। योः। अभि। स्रवन्तु। नः॥ शम्। नः। देवीः। अभिष्टंये। आपः। भवन्तु। पीतयें॥ शम्। योः। अभि। स्रवन्तु। नः॥ हे (देवीः) दिव्यगुणों वाले ईश्वर! हमारी सुखी होने की (अभिष्टये) इच्छाओं को पूर्ण कीजिए। (आपः) जल के स्रोत (नः) हमारी (पीतये) प्यास को बुझाकर हमारे लिए (शम्) कल्याणकारी (भवन्तु) हों। (योः) आप (अभि) सभी ओर से (नः) हम पर (शम्) कल्याणकी (स्वन्तु) वर्षा कीजिए।

देवी-स्वरूप ईश्वर पूर्ण अभीष्ट कीजिए। यह नीर हो सुधामय कल्याण दान दीजिए॥ नित ऋद्धि-सिद्धि बरसे हित हो सदा हमारा। बहती रहे हृदयमें सद्धर्म प्रेम-धारा॥ vidhanaa vinay yahee hai, mai veeravar kahaaoon hokar shataayu swaamin, tumase lagan lagaaoon sau saal tak hamaaree, aankhe ho jyoti-dhaaree ho shrot shravya-shaalee, saksham sadaa sukhaaree vaanee viraat vibhu kee, viradaa-valee sunaawe paratantrataa hai paatak, svaatantry mantr gaave sau varsh se adhik bhee, jeevit rahe karaaree sarvaang kee kriyaaen, sthir rahe hamaaree

That Ever-wakeful Eye, Eternal, Pure
That watches close the deeds of right and wrong
Whose Holy Grace the learned souls secure
May bless in life my prayer's sacred song.
And may we live and see a hundred years;
A hundred autumns hear His Holy Name,
And sing His Glory free from human fears
That close attends the heels of earthly fame.
And if we live for more than a hundred years,
The same delights attend us all the days
We live, and bring us all the sacred cheers
For which the heart to gracious heaven prays

aachamana:

Sipping sacramental water as amrita, the nectar of deathlessness, and asking for a life filled with happiness. (Chant the mantra once and sip the water thrice).

19. om shanno deveerabhishtaya 'aapo bhavantu peetaye, shañyorabhi sravantu naḥ.

Yajuḥ 36:12

sham naḥ deveeḥ abhiṣhṭaye aapaḥ bhavantu peetaye, sham yoh abhi sravantu nah.

(abhi
abhi
abh

devee svaroop eeshvar poorn abheesht keejie yah neer ho sudhaa-may kalyaan daan deejie nit riddhi siddhi barase hit ho sadaa hamaaraa bahatee rahe hriday me sad-dharm prem dhaaraa O All-pervading Mother, Sweet and Divine, Be pleased to bless the cravings of my soul To reach thy bosom. May this world of mine, Be filled with peace and bliss from pole to pole.

अथ ब्रह्म गायत्री सावित्री गुरु मंत्र

कम से कम तीन बार गायत्री मन्त्र का उच्चारण करें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत् सं<u>वितु</u>र्वरेण्यं भर्गो <u>दे</u>वस्य धीमहि ।

थियो यो नः प्रचोदयात् ॥२०॥ यजुः २२:९, यजुः ३:३५, यजुः ३०:२, यजुः ३६:३, ऋग् ३:६२:१०

भूः । भुवः । स्वः । तत् । सृ<u>वितुः । वरेण्यम् । भर्गः । द</u>ेवस्य । धी<u>महि</u> ।

धियः । यः । नः । प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात् ॥

हम (तत्) उस (भूः) सृष्टि के पालनकर्त्ता, (भुवः) बुराईयों के विनाशक, (स्वः) सुखों के रचियता (देवस्य) ईश्वर का (धीमिह) ध्यान धरे जो (सिवतुः) ब्रह्माण्ड का मूल, (वरेण्यम्) वरण करने योग्य व (भर्गः) पापरहित है। (यः) वह ईश्वर (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रऽचोदयात्) प्रकाशरूप ज्ञान मार्ग की ओर प्रेरित करे।

ओंकार आद्य अक्षय, अद्वैत अज अनुपम। अदभुत अजर अजन्मा, अव्यय अनघ अरूपम॥ हो सत्य रूप स्वामी, चित चारू चेत धारी। आनंद ओजमय हो, आदर्श आर्त हारी॥ प्राणेश! प्रार्थना है, पथ पुण्यमय दिखाओ। मिथ्या ममत्व मत्सर, मल मोह मद मिटाओ॥ सेवा सुमन पिरोकार, माला महत बनाऊँ। अनुराग भावना से, भगवान पर चढ़ाऊँ॥ मुद मांगलिक मन से, मैं मोक्ष धाम जाऊँ। सर्वोच्च शांति सुखकर, सात्विक समृद्धि पाऊँ॥ विश्वात्मा विनय है, वर दीजिए विचारी। धी धर्ममय धवल हो, ध्रुव धैर्य ध्यानधारी॥

atha brahma gaayatree saavitree guru mantra

As a pelude to Sandhayaa, chant **Om** and **Gayatree Mantra** at least three times, contemplating on their meanings. The **Gaayatree Mantra** has been taught in a disciplic succession by ancient rishis, to assist us to unlock the source of inspiration.

20. om bhoorbhuvah svah,

tat saviturvareņyam bhargo devasya dheemahi, dhiyo yo naḥ prachodayaat.

Yajuḥ 36:3, Yajuḥ 3:35, Yajuḥ 22:9, Yajuḥ 30:2, Rig 3:62:10

bhooh bhuvah svah,

tat savituḥ vareṇyam bhargaḥ devasya dheemahi, dhiyaḥ yaḥ naḥ pra-chodayaat.

(dheemahi) Let's meditate upon and think (devasya) of the one with divine qualities, (tat) that God who is (bhooh) the sustainer of all life, (bhuvah) the destroyer of evil, (svah) the creator of happiness, source of all benevolence, (bhargah) pure, (savituh) the basis of all creation and (varenyam) the only one worthy of having relationship with. May (yah) that God, (prachodayaat) guide (nah) our (dhiyah) mind, thoughts and determinations towards illumination of knowledge.

onkaar aady akṣhay, advait aj anupam adabhut ajar ajanmaa, avyay anagh aroopam ho satya roop svaamee, chit chaaroo chet dhaaree aanand ojamay ho, aadarsh aart haaree praanesh praarthanaa hai, path punya-may dikhaao mithyaa mamatva matsar, mal moh mad miṭaao sevaa suman pirokar, maalaa mahat banaaoon anuraag bhaavanaa se, bhagavaan par chadhaaoon mud maangalik man se, mai mokṣh dhaam jaaoon sarvochch shaanti sukhakar, saatvik samṛiddhi paa-oon vishvaatmaa vinay hai, var deejiye vichaaree dhee dharma-may dhaval ho, dhruv dhairy dhyaana-dhaaree

Oh Soul of Life, the Holy King of Kings!
Oh God of all the regions, high and low,
Oh Lord of Joy, Whose Glory nature sings,
Who shapes the earth and lets the mortals grow.
We seek Thy blessed Feet to meditate
Upon Thy Glorious Form of Holy Light
Which drives away the gloom of sins we hate
And makes the souls of righteous people bright.
My heart, oh Father, meekly prays to Thee
To win Thy Grace, to make me good and wise,
And bless my mind with knowledge, full and free
From dark and vicious thoughts of sins and lies.

समर्पण

_____ हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनाऽऽदिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ॥२१॥

हे ईश्वर दयानिधे! भवत् । कृपया । अनेन । जप । उपासना । आदि । कर्मणा । धर्मार्थ । काम । मोक्षाणाम् । सद्यः । सिद्धिः । भवेत् । नः ॥

(हं) हे (दया) करुणा के (निधे) सागर (ईश्वर) ईश्वर! (भवत्) आपकी (अनेन) पापरहित (कृपया) कृपाओं को प्राप्त कर (नः) हम (जप) जप (उपासना) उपासना (आदि) आदि कर्मों के (कर्मणा) द्वारा (सद्यः) शीघ्र ही (सिद्धिः) ज्ञान सिद्धि प्राप्त कर (मोक्षाणाम्) मोक्ष की (काम) इच्छा रखते हुए (धर्मार्थ) धर्म के लिए कार्यरत (भवेत्) हो जाएं।

नमस्कार

नमः । शम्भवायेति शम्ऽभवायं । च । मयोभवायेति मयःऽभवायं । च । नमः । शङ्करायेति । शम् । करायं । च । मयस्करायं मयःकरायं ते मयःकरायं । च । नमः । शिवायं । च । शिवतंरायेति शिवऽतंराय । च ॥ (शम्) शान्ति के (भवाय) स्रोत के लिए (च) और (मयः) सुखों के (भवाय) स्रोत के लिए हमारा (नमः) नमस्कार । (शम्) शान्ति के (कराय) रचिता के लिए (च) और (मयः) सुखों के (कराय) रचिता के लिए (नमः) हमारा नमस्कार । (शिवाय) आनन्द के स्रोत (च) और (तराय) अत्यन्त (शिव) आनन्द देने वाले प्रभु के लिए हमारा (नमः) नमस्कार ।

हे मंगलेश शंकर! मंगल करो हमारा। पावन प्रकाश पाएं, परमार्थ पुण्य द्वारा॥ पिर ज्ञान पय पिलादो, अवढर अगाध दानी। तेरी शरण में आया, है भक्त यह भवानी॥ अब अंत में प्रभुजी, तुमको नमन करें हम। वेदों के ज्ञान द्वारा, जीवन सफल करें हम॥

ओ३म् शान<u>्तिश्शान्तिश्शान्तिः</u> ॥२३॥

(शान्तिः) जड जगत हमारे लिए शान्तिदायक हो । (शान्तिः) चेतन जगत हमारे लिए शान्तिदायक हो । (शान्तिः) हमें आन्तरिक शान्ति प्राप्त हो ।

॥ इति सन्ध्योपासना विधिः॥

samarpana:

Surrender and Dedication

21. he eeshvara dayaanidhe!

bhavatkṛipayaa'nena japopaasanaa''dikarmaṇaa dharmaarthakaamamokṣhaaṇaan sadyaḥ siddhirbhavennaḥ.

he eeshvara dayaanidhe! bhavat kripayaa anena japa upaasanaa aadi karmanaa dharmaartha kaama mokshaanaam sadyah siddhih bhavet nah.

(he) O (eeshvara) God! O (nidhe) ocean of (dayaa) compassion! With the help of (bhavat) your (anena) sinless (kṛipayaa) benevolence, may (naḥ) we perform (japa) prayers and (upaasanaa) meditation (aadi) etcetera in order to (sadyaḥ) quickly (bhavet) attain (siddhiḥ) perfection in your knowledge and may we engage in (dharmaartha) righteous (karmaṇaa) conduct with a (kaama) desire to attain (mokṣhaaṇaam) nirvaṇa.

namaskaara:

Final Obeisance to God

22. om namaḥ shambhavaaya cha mayobhavaaya cha namaḥ shaṅkaraaya cha mayaskaraaya cha namaḥ shivaaya cha shiva taraaya cha.

Yajuh 16:41

namaḥ sham-bhavaaya cha mayaḥ-bhavaaya cha namaḥ shivaaya cha shivataraaya cha.

We (namah) bow to the (bhavaaya) source of (sham) peace (cha) and (mayah) happiness. We (namah) bow to the (karaaya) creator of (sham) peace and (mayah) happiness. We (namah) bow to the (shivaaya) source of benevolence, who provides us even (taraaya) greater (shiva) bliss.

he mangalesh shankar! mangal karo hamaaraa paawan prakaash paaen, paramaarth puny dwaaraa parijñaan pay pilaado, avadhar agaadh daanee teree sharan men aayaa, hai bhakt yah bhavaanee ab ant men prabhujee, tumako naman karen ham vedon ke jñaan dwaaraa, jeevan saphal kare ham

And now I bow to Thee, O God of calm,
O God of Peace, and Lord of Bliss Divine!
Thy Grace supplies to burning hearts a balm,
Thy blessings in my right desires shine!
Finally I bow to Thee again and again
Thy Vedic knowledge brings success in my life.

23. om shaantish-shaantish-shaantih

(shaantiḥ) May the forces of nature bring us peace! (shaantiḥ) May all living creatures bring us peace! (shaantiḥ) May we experience internal peace!

iti sandhyopaasana vidhih